IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, September 2022
Impact Factor: 6.252

न्यायदर्शन : महर्षि गौतम

डॉ. अनामिका चतुर्वेदी
अतिथि विद्वान् (संस्कृत साहित्य),
शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

शोध–सारांशः–

महर्षि गौतम के द्वारा न्यायदर्शन की रचना की गयी है, तत्वज्ञान का जो साधन होता है, वह दर्शन नाम से अभिहित होता है। छः भारतीय दर्शनों में न्यायदर्शन का अपना विशिष्ट स्थान रखता है। महर्षि गौतम का एक अपर नाम अक्षपाद भी है। शोध पत्र में महर्षि गौतम के द्वारा न्यायदर्शन की रचना का संक्षिप्त वर्णन करने का मौलिक प्रयास है।

मुख्य शब्द : न्यायदर्शन, महर्षि, गौतम, अक्षपाद, अभिहित, चिन्तन निःश्रेयसाधिगम आदि।

संदर्भ स्रोतः

[1]. वात्स्यायनकृत न्यायभाष्य 'द्रष्टव्य' तर्कभाषा, गजाननशास्त्री मुसलगाँवकर चौखम्बा सुरभारती, पृ. सं. 23

[2]. बृहदारण्यकोपनिषद् 2/4/5 शाङ्करभाष्य, गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. सं. 546

[3]. ईशादि नौ उपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद् 3/8 गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. सं. 438

[4]. आद्यगुरूशङ्कराचार्यकृत भजगोविन्दम्,

[5]. तर्कसंग्रह अन्नंभट्टकृत, व्याख्याकार गोविन्दाचार्य, प्रत्यक्षखण्ड, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, पृ. सं. 153

[6]. ईशादि नौ उपनिषद्, मुण्डकोपनिषद् 2/2/7 गीताप्रेस गोरखपुर, पृ. सं. 235

[7]. तर्कभाषा, केशवमिश्र, प्रमेय प्रकरण, गजानन शास्त्री मुसलगॉवकर, चौखम्बा सुर भारती पृ. सं. 235

[8]. गौतममुनिकृत न्यायदर्शन 1/1/15 आचार्य उदयवीर शास्त्रीकृत विद्योदय भाष्य, विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द, पृ. सं. 45

[9]. गौतममुनिकृत न्यायदर्शन 1/1/41 आचार्य उदयवीर शास्त्रीकृत विद्योदय भाष्य, विजय कुमार गोविन्द राम हासानन्द, पृ. सं. 81

[10]. न्यायसूत्र भाष्य 1/1/1

[11]. ऋग्वेद 10/81/3 द्रष्टव्य ब्रह्मसूत्र विद्योदय भाष्य, पृ. सं. 59